मन रम जाये किस्सों की दुनिया में

फोटो– पुरुषोत्तम

– योगेश राज

कोरोना के समय हुई स्कूलबंदी के बाद बच्चों की सीखने की दक्षताओं में जिस तरह की क्षति हुई है उसे दूर करने में शिक्षक बाल साहित्य का उपयोग कर रहे हैं और इसे बहुत उपयोगी पा रहे हैं।

स्वस्थ बाल साहित्य का काल्पनिक रंग–बिरंगा चित्रांकित संसार बच्चों को उनके वास्तविक जीवन से जुड़े विचारों और मुद्दों से अवगत कराता है जो शायद अभी तक उनके लिए अनदेखी हो, या उनकी कल्पनाओं से परे है। कक्षाकक्ष के अनुभवों में अक्सर यह देखा गया है कि बच्चे स्कूल में पाठ्यपुस्तकों की तुलना में बाल साहित्य की पुस्तकों को ज्यादा प्राथमिकता या तवज्जो देते हैं, यह अनुभव किया जा सकता है और शायद वर्तमान में विद्यालय कक्षाकक्ष में अनुभव किया भी जा रहा है कि बच्चे अक्सर विद्यालय के पुस्तकालय से बाल साहित्य की पुस्तकों को अपने घर ले जाने के लिए अपने शिक्षकों से बार–बार अनुरोध करते रहते हैं।

बच्चों में स्वतंत्र पाठन की अवधारणा उनकी स्कूली पाठ्य पुस्तकों की अपेक्षा बाल साहित्य की पुस्तकों में अधिक देखी जा सकती है। क्योंकि बच्चे जब स्कूली पुस्तकों को पढ़ते हैं तो कहीं न कहीं उनके मन मस्तिष्क के भावों में यह रहता है कि उनको इस पाठ को पढ़ने के बाद इस पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तरों को लिखना है, हल करना है। अतः एक सीमित दायरा उस पाठ को लेकर उनके मन मस्तिष्क में बन जाता है और उनका यही नज़रिया उस पाठ में निहित अन्य शैक्षिक दक्षता सम्बंधी उद्देश्यों के व्यापक दृष्टिकोण को तिलांजलि देता है। जबकि बाल साहित्य की पुस्तकों को पढ़ते समय उनके मन मस्तिष्क में उपरोक्त सीमित दायरा नहीं बन पाने के कारण वे एक स्वतंत्र पाठक के रूप में कहानी कल्पनाओं को अपनी वास्तविक जीवन या उसकी घटनाओं को अपने परिवेश से जोड़ पाते हैं शायद यही आनंद उनकी जिज्ञासा का कारण भी बन जाता है।

हालांकि वर्तमान की स्कूली पाठ्यपुस्तकों में ऐसा नहीं है लेकिन एक सोच परंपरागत रूप से शिक्षण कार्य करने और कराने वाले दोनों के अंदर कहीं न कहीं बन गई है कि बच्चे वर्ण को रटकर समझ लें ताकि वह शब्दों को पढ़ना और लिखना सीख जाएं। जब वो पढ़ना–लिखना सीख जाएंगे तब आगे का शिक्षण कार्य आसान हो जाएगा क्योंकि फिर वह किसी भी पाठ्यपुस्तक को पढ़ लेगा और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख देगा, क्या यह

उचित है? हमें इस विचार को आत्मसात करना ही होगा कि समझना, पढ़ने से ज्यादा व्यापक है हालांकि दोनों जरूरी है। मगर जब हम समझ के स्तर दक्षता की बात करते हैं तो हम कई अन्य भाषाओं से संबंधित शैक्षिक दक्षताओं जैसे पठन, चित्र पठन, चित्र लेखन, शब्दों से कहानी बनाना, मनचाहे विषयों पर कहानी लिखना, किसी दिए गए परिवेश या अनुभव पर लिखना, कहानी पर चित्र बनाना, अपने विचार व्यक्त कर पाना आदि दक्षताओं की पूर्ति अपने शिक्षण कार्यों के माध्यम से बच्चों को करवा पाने में सफल हो पाते हैं।

आज मैं कक्षाकक्ष में जब बाल साहित्य की ओर उन्मुख होता हूं तो मेरी स्मृतियां मुझे अक्सर बालपन की ओर ले जाती हैं क्योंकि मैंने भी बचपन में अपनी पॉकेटमनी से कई रंग–बिरंगी पुस्तकों को खरीदा है उन्हें पढ़ा है। भले ही मैं उस समय बाल साहित्य की अवधारणा से अनजान था क्योंकि वह मुझे स्कूली पाठ्यक्रम की पुस्तकों की अपेक्षा ज्यादा आकर्षित करती थीं। साथ ही एक भय भी मेरे मन में रहता था कि मैं पाठ्यक्रम की पुस्तकों को छोड़कर अन्य बाल साहित्य की कहानी की पुस्तकों में समय व्यतीत करके अधिक समय नष्ट कर रहा हूं। मैं घर के आंगन या छत के किसी कोने को टटोलता था। इन पुस्तकों को पढ़ने के लिए। मैं अपने स्कूल के बस्ते में अन्य पाठ्यक्रम की पुस्तकों के साथ इन पुस्तकों को छिपाकर ले जाता था, लेकिन जब तब मुझे मौका या समय मिलता मैं इन पुस्तकों को पढ़ता था क्योंकि वह मुझे आनंदित करती थी। क्योंकि बाल साहित्य की पुस्तकों में कहानी कविताओं का काल्पनिक संसार होता है। इनमें लोक कथाओं कहानियों के अलावा अधिकतर जंगल के जानवरों उनके रहन–सहन को एक काल्पनिक व्यवस्थित समाज के रूप में दर्शाकर चित्रों की प्राथमिकता के साथ चित्रांकित किया जाता है क्योंकि बच्चे अपने घर पर भी इस तरह की कहानियां लोककथाओं को अपने दादा, दादी, नाना, नानी, मम्मी, पापा या घर के अन्य बड़े सदस्यों से सुन चुके होते हैं तो उनके मन मस्तिष्क में भी कई काल्पनिक भाव चित्र पहले से ही बने हुए होते हैं। जिसके कारण वो अनायास ही बाल साहित्य की इस काल्पनिक दुनिया में अपने आप को जोड़ लेते हैं और उनकी जिज्ञासा इन पुस्तकों की ओर बढ़ती चली जाती है। उनके मन में कई प्रकार के सवाल जन्म लेते हैं उनके मन में उठे हुए कई सवालों के जवाबों को वह इन कहानी कविताओं की काल्पनिक दुनिया में स्वयं का विवेक का इस्तेमाल करते हुए ढूंढने की कोशिश करते हैं। जिसका सीधा सीधा अर्थ है कि उन्हें तर्क करना आ रहा है। यही तार्किकता का दूरगामी शैक्षिक विकास उनके अंदर उच्च स्तरीय चिंतन की क्षमता का विकास करने में सहायक होता है।

मसलन मेरे द्वारा कक्षा दो, तीन, और चार के तीन बच्चों को चयन किया गया। उनमें से कक्षा 2 के बच्चे से पुस्तक रैक से कहीं से एक किताब का चुनाव कराया गया। उसके द्वारा एक पुस्तक जिसका शीर्षक मुनमुन और मुन्नू था। उपरोक्त पुस्तक को तीनों बच्चों को एक साथ अवलोकन करने के लिए दिया गया। लगभग 15 से 20 मिनट तक पुस्तक का अवलोकन किया। बच्चे चित्र आधारित पुस्तक का आनंद भाव के साथ अवलोकन कर रहे थे। तदुपरांत छात्रों से कहानी में आए पाठों के संदर्भ में वार्तालाप का क्रम प्रारंभ किया गया।

शिक्षक–बच्चों पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर आप क्या देख रहे हैं?

छात्र–लड़की, कबूतर, बिल्ली।

शिक्षक– लड़कियां कितनी हैं

छात्र– दो लड़कियां हैं।

शिक्षक– उनके नाम क्या है?

अधिकतर छात्र– रमा और रानी।

शिक्षक– इनमें रानी कौन है?

छात्र– जिसने हरे रंग की फ्रॉक पहन रखी है।

अन्य छात्र– जिसके बाल खुले हुए हैं।

शिक्षक अगले पृष्ठ की ओर बढ़ते हुए, बच्चों इस पृष्ठ पर पर क्या–क्या देख रहे हो?

छात्र (मिली जुली प्रतिक्रिया)– दो कबूतर देख रहे हैं, घरों को देख रहे हैं।

शिक्षक– कबूतर किसके घर में आए हैं?

छात्र– रमा के।

शिक्षक– आपने कबूतर देखे हैं?

छात्र– हां हमने अपने घर की छत में देखे हैं।

अन्य छात्र– मैंने स्कूल की छत में देखे हैं।

शिक्षक– कबूतर को देखने कौन आया है?

छात्र– रमा देखने आई।

शिक्षक–रमा ने कबूतरों के अलावा और क्या देखा?

छात्र– घोंसला।

शिक्षक–घोंसला किन–किन चीजों से बनता है?

छात्र अपनी स्थानीय भाषा में– पुराल से

शिक्षक कथन व्याख्या– घोंसला तिनकों से बनता है अधिकतर पक्षीं चोंच में तिनका पकड़कर लाते हैं और

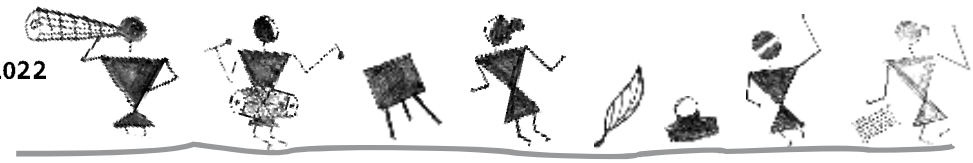

अपना घोंसला बनाते हैं। कबूतर भी अपना घोंसला ऐसे ही बनाते हैं।

शिक्षक–पक्षी कौन होते हैं ?

प्रथम छात्र– जिनके पंख होते हैं।

द्वितीय छात्र– जो आसमान में उड़ते हैं।

अन्य छात्र– जो अंडे देते हैं।

शिक्षक– अंडे में क्या होता है?

मिली जुली छात्र प्रतिक्रिया– अंडे से चूजे निकलते हैं, पक्षियों के बच्चे निकलते हैं।

शिक्षक– क्या पक्षी अपने बच्चों को दूध पिलाता है?

छात्र– नहीं दाना खिलाते हैं।

शिक्षक–आपने चमगादड़ देखे हैं?

सभी छात्र– हां।

शिक्षक– चमगादड़ क्या है?

सभी छात्र– पक्षी।

शिक्षक–मगर चमगादड़ तो अंडे नहीं देता। तो चमगादड़ पक्षी क्यों है?

सभी छात्र निरुत्तर!

शिक्षक कथन व्याख्या–चमगादड़ अंडे नहीं देती ये सीधा बच्चों को जन्म देती है और उन्हें दूध पिलाती हैं इस प्रकार चमगादड़ दूध पिलाने वाला एकमात्र स्तनधारी प्राणी जानवर है जिसे फ्लाइंग फॉक्स यानी उड़ने वाली लोमड़ी भी कहा जाता है।

शिक्षक अगले पृष्ठ की ओर बढ़ते हुए– रमा कहां खड़ी है?

छात्र प्रतिक्रियाएं– डिब्बे के ऊपर खड़ी है। ड्रम के ऊपर खड़ी है।

शिक्षक– रमा क्या कर रही है?

छात्रा–कबूतर के घोंसले को देख रही है।

अन्य छात्रा– रमा कबूतर के घोंसले में अंडे को देख रही है।

शिक्षक– घोंसले में अंडे देखकर कौन खुश हुआ?

छात्रा– रमा और रानी।

शिक्षक– रमा और रानी के अलावा आंगन में कौन–कौन है?

छात्र–बिल्ली।

शिक्षक– बिल्ली का क्या नाम है?

छात्र– मुनमुन

शिक्षक– बिल्ली को किसने भगा दिया?

छात्रा– रमा ने भगा दिया।

शिक्षक– मुनमुन को दूध किसने पिलाया?

छात्र– रमा ने पिलाया

शिक्षक– रमा ने मुनमुन को दूध क्यों पिलाया होगा?

छात्र– क्योंकि बिल्ली का पेट भर जाएगा और वो शायद कबूतर के अंडे को नुकसान नहीं पहुंचाए।

शिक्षक– अंडे में दरार क्यों रही होगी?

छात्र– क्योंकि अंडे से कबूतर का बच्चा बाहर निकलने वाला था।

शिक्षक– रमा और रानी ने कबूतर के बच्चे का क्या नाम रखा?

सभी छात्र– मुन्नू।

इस तरह यदि हम देखें तो कबूतर, कबूतर का घोंसला, कबूतर के अंडे, अंडे से बच्चे का निकलना, घोंसले के अंडों पर बिल्ली का भय, यह सब आसपास की प्राकृतिक परिवेशीय घटनाओं का समाकलन उपरोक्त पुस्तक कहानी पर दिया गया है। शब्दों के साथ चित्र के माध्यम से। उपरोक्त संदर्भ में शिक्षक–छात्र वार्तालाप में अंडों को बचाने के लिए बच्चों द्वारा बिल्ली को दूध पिलाने के कारण प्रभाव में बच्चों के विवेक का आकलन किया जा सकता है। बिल्ली द्वारा कबूतर के बच्चों को नुकसान पहुंचाने के भय को बच्चों में भावनाओं और संवेदनशीलता के रूप में देखा जा सकता है।

जहां तक बाल सहित्य और पाठयपुस्तक के संबंध और कक्षाकक्ष में किए गए प्रयासों के संदर्भ की बात है, तो यही कहना चाहूंगा कि बच्चों की नैसर्गिक जिज्ञासा के कारण कुछ नया नहीं करना पड़ा क्योंकि बच्चे स्वयं ही बाल पुस्तकों को लेकर आनंदित रहते हैं। बाल साहित्य की पुस्तकों का मेरी समझ से एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यहां कहानियां, कविताओं को समझने के लिए किसी तकनीकी शाब्दिक भाषा की जरूरत नहीं होती क्योंकि यहां बच्चे चित्रों के माध्यम से अवधारणाओं को समझ लेते हैं। यहां बच्चे अपने आसपास के परिदृश्य के जाने–पहचाने दृश्यों को इन पुस्तकों में देखते हैं उनको समझते हैं और बोलकर अपनी भावनाओं को व्यक्त कर लेते हैं भले ही उन्हें भाषाई शब्दों का वर्ण शब्द तकनीकी ज्ञान अभी न हुआ हो लेकिन यहां बच्चों में सजगता की समझ, उच्च स्तरीय तार्किक चिंतन की क्षमता की विकासीय गतिशीलता को उनके अंतर हृदय में देखा जा सकता है, महसूस किया जा सकता है, जो निश्चित ही आगे चलकर उनकी भाषायी तकनीकी दक्षता को समझने में उनकी राह को प्रशस्त करेगा।

लेखक राजकीय प्राथमिक विद्यालय मढ़ैया देवी काशीपुर, उत्तराखण्ड में सहायक अध्यापक हैं।